❍ 09 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *साक्षात्कार आदि की आश तो नहीं रखी ?*

➢➢ *राजयोग की तपस्या की ?*

➢➢ *अपने मस्तक पर सदा बाप की दुआओं का हाथ अनुभव किया ?*

➢➢ *सेवा द्वारा अविनाशी ख़ुशी की अनुभूति की और करवाई ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *बीजरूप स्थिति में रहने का अभ्यास तो करो* लेकिन कभी लाइट-हाउस के रूप में, कभी माइट-हाऊस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन.... *भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी करो तो रमणीकता आयेगी, बोर नहीं होंगे।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ"*

〰✧ कोई भी मेरापन, मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी नेचर, कुछ भी मेरा है तो बोझ है और बोझ वाला उड़ नहीं सकता, फरिश्ता नहीं बन सकता। तो फरिश्ते हो या कोई न कोई बोझ अभी रहा हुआ है? आइवेल के लिये थोड़ा-थोड़ा छिपाकर रखा है? मेरा-मेरा कहते मैले हो गये थे, अभी तेरा-तेरा कहते स्वच्छ बन गये। *तो फरिश्ता अर्थात् मेरापन अंशमात्र भी नहीं। संकल्प में भी मेरे पन का भान आये तो समझो मैला हुआ। किसी भी चीज के ऊपर मैल चढ़ जाये तो मैल का बोझ हो जायेगा ना। तो ये मेरापन अर्थात् मैलापन। फरिश्ते हैं, पुरानी दुनिया से कोई रिश्ता नहीं।*

〰✧ *सेवा अर्थ हैं, रिश्ता नहीं है। सेवा भाव से सम्बन्ध में आते हो। गृहस्थी बनकर सेवा नहीं करते हो, सेवाधारी बनकर सेवा करते हो। ऐसे सेवाधारी हो? सेवास्थान समझते हो या घर समझते हो? तो जैसे सेवा स्थान की विधि होती है उसी विधि प्रमाण चलते हो कि गृहस्थी प्रमाण चलते हो? सेवास्थान समझने की विधि है न्यारे और बाप के प्यारे।* जरा भी मेरेपन का प्रभाव नहीं पड़े। आग है लेकिन सेक नहीं आये। क्योंकि साधन हैं ना। जैसे आग बुझाने वाले आग में जाते हैं लेकिन खुद सेक में नहीं आते, सेफ रहते हैं क्योंकि साधन हैं, अगर आग बुझाने वाले ही जल जाये तो लोग हंसेंगे ना। तो चाहे वायुमण्डल में परिस्थितियों की आग हो लेकिन प्रभाव नहीं डाले, सेक नहीं आये। ऐसे नहीं कि परिस्थिति नहीं है तो बहुत अच्छे और परिस्थिति आ गई तो सेक लग गया।

तो ऐसे फरिश्ते हो ना।

〰✧ फरिश्ता कितना प्यारा लगता है! अगर स्वप्न में भी किसके पास फरिश्ता आता है तो कितना खुश होते हैं। *फरिश्ता जीवन अर्थात् सदा प्यारा जीवन। बाप प्यारे से प्यारा है ना तो बच्चे भी सदा सर्व के प्यारे से प्यारे हैं। सिर्फ बाल बच्चे, पोत्रे धोत्रों के प्यारे नहीं, हद के प्यारे नहीं, बेहद के प्यारे।* क्योंकि सर्व आत्मायें आपका परिवार हैं, सिर्फ 10-12 का परिवार नहीं है। कितना बड़ा परिवार है? बेहद। सर्व के प्यारे। चाहे कैसी भी आत्मा हो, लेकिन आप सर्व के प्यारे हो। जो प्यार करे उसके प्यारे हो, ये नहीं। सर्व के प्यारे। लड़ाई करने वाले, कुछ बोलने वाले प्यारे नहीं। ऐसे नहीं, सर्व के प्यारे। आप लोगों ने द्वापर से बाप को कितनी गाली दी, फिर बाप ने प्यार किया या घृणा की? hयार किया ना। तो फालो फादर।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा, सम्पूर्णता की समीपता की निशानी - *सेवा में रहते, समाचार सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते थे। यह अनुभव किया ना।* एक घण्टे के समाचार को भी 5 मिनट में सार समझ बच्चों को भी खुश किया और अपनी अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का भी अनुभव कराया।

〰✧ *सम्पूर्णता की निशानी - अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति चलते-फिरते, सुनते, करते अनुभव किया।* तो फालो फादर नहीं कर सकते हो? ब्रह्मा बाप से ज्यादा जिम्मेवारी और किसको है क्या? ब्रह्मा बाप ने कभी नहीं कहा कि मैं बहुत बिजी हूँ। लेकिन बच्चों के आगे एग्जाम्पल बने। ऐसे अभी समय प्रमाण इस अभ्यास की आवश्यकता है।

〰✧ सब सेवा के साधन होते हुए भी साइलेन्स की शक्ति के सेवा की आवश्यकता होगी क्योंकि *साइलेन्स की शक्ति अनुभूति कराने की शक्ति है।* वाणी की शक्ति का तीर बहुत करके दिमाग तक पहुँचता है और अनुभूति का तीर दिल तक पहुँचता है। तो *समय प्रमाण एक सेकण्ड में अनुभूति करा लो* - यही पुकार होगी। सुनने-सुनाने के थके हुए आयेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ प्रकृति-पति हो, इस प्रकृति के खेल को देख हर्षित होते हो। *चाहे प्रकृति हलचल करे,चाहे प्रकृति सुन्दर खेल दिखाए - दोनों में प्रकृति-पति आत्माएं साक्षी हो खेल देखती हो। खेल में मज़ा लेते हैं, घबराते नहीं हैं।* इसलिए बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल अडोल स्थित रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं। तो यह स्थिति का आसन सबको अच्छा लगता है या हलचल का आसन अच्छा लगता है? *अचल आसन अच्छा लगता है ना।

कोई भी बात हो जाए चाहे प्रकृति की, चाहे व्यक्ति की, दोनों अचल स्थिति के आसन को ज़रा भी हिला नही सकते हैं।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- जब तक जीना है, पढ़ाई पढ़ सीख कर, पावन दुनिया में जाना*

➳ _ ➳ मीठे बाबा की यादो में डूबी हुई में आत्मा... सोचती हूँ कि *परमधाम से कितनी सजी संवरी मै आत्मा... इस धरा पर उतरी.*.. सुखो को जीते जीते कैसे मै आत्मा... देह के भान में आकर, अपने निज स्वरूप को ही भूल बेठी... कैसे, मै देह समझ कर, इस खेल में उलझ गयी... और अथाह दुखो से घिर गयी... मीठे बाबा ने घर से जो मेरी दारुण दशा को निहारा... *मेरे प्यार में मेरे सुखो की चाहत में, मेरा बाबा धरती पर आ गया... सारी स्मर्तियो को हथेली पर संजोये हुए, मेरे दिल में भरने आ गया..*. अथाह रत्नों को अपनी बाँहों में भरकर... मुझे पुनः सुखो में अमीर और पावन बनाने आ गया... ऐसे मीठे प्यारे दिलेर पिता की आभारी मै आत्मा... मीठे बाबा की झोपडी में प्रवेश करती हूँ....

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान धन के खजानो से भरते हुए मालामाल करते हुए कहा:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *मीठे भाग्य की बदौलत ईश्वर पिता टीचर बनकर, जीवन को ज्ञान निधि से सजा रहा है.*.. इस धन से भरपूर होकर स्वर्ग के मीठे सुखो के अधिकारी बनो... इसलिए जब तक जीना है, अंतिम साँस तक भी पढ़ाई को नही छोड़ना है... यह पढ़ाई ही दिव्य गुणो से सजाकर, पावन दुनिया का मालिक बनाएगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से सारी खाने और खजाने लेकर मुस्कराते हुए कहती हूँ:-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *महान भाग्य ने दिलवाये ईश्वरीय प्यार को पाकर खुशियो के ऊँचे शिखर पर हूँ.*.. साधारण जीवन ईश्वरीय प्यार और ज्ञान को पाकर... कितना सुखदायी और मालामाल हो गया है... मै आत्मा ज्ञान परी बनकर मुस्करा रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान रत्नों की जागीर सौंपते हुए कहा ;-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *सदा ज्ञान रत्नों से खेलते रहो... यह ज्ञान रत्न ही सारे सुखो को आपके कदमो तले सजायेंगे..*.. ईश्वरीय ज्ञान से सदा आबाद रहना है, यह ज्ञान और श्रीमत ही सच्चा सहारा है... सांसो और यादो में पावन बनकर... पावन दुनिया में अथाह सुखो के साम्राज्य को जीना है...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के असीम प्यार को मन बुद्धि में डुबोते हुए कहती हूँ :-* "सच्चे साथी मेरे बाबा... *आपने मुझ आत्मा को अपने मजबूत हाथो में थाम मेरा सदा का कल्याण किया है.*.. दुःख भरी दुनिया से निकाल... सुखो के सवेरे को मेरे जीवन में बिखेरा है... मै आत्मा ईश्वरीय दौलत को पाकर... सदा की अमीरी से भरपूर हो गयी हूँ...

❊ *प्यारे बाबा ने अपने अमूल्य ज्ञान रत्नों से मुझ आत्मा के जीवन को दमकाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... यह ईश्वरीय पढ़ाई अनमोल है... स्वयं भगवान धरा पर आकर, अपनी फूलो सी गोद में बिठाकर... पढ़ाई पढ़ा रहा... अपने भूले हुए बच्चों को पुनः दिव्य गुणो और पावनता से सजा रहा

है... ऐसी पढ़ाई का दिल से सम्मान करो और अंतिम साँस तक पढ़ते रहो... *यह पढ़ाई ही अथाह सतयुगी सुखो में बदल कर... जीवन को सच्ची खुशियो से महकाएगी*...

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से अखूट खजाने लेकर महा धनवान् बनकर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे मेरे बाबा... मै आत्मा अपने मीठे भाग्य पर बलिहार हूँ... जिसने मुझे जादूगर बाबा से मिलवाया हे... *अपने पुण्यो की आभारी हूँ जिसने ईश्वरीय अमीरी से मुझे छलकाया है.*.. भगवान को पाने वाली, उनसे पढ़ने वाली मै महा भाग्यवान आत्मा हूँ... आपका हाथ और साथ मै आत्मा कभी न छोड़ूंगी..."मीठे बाबा से असीम प्यार को लिए दिल में समाये मै आत्मा... इस धरा पर उतर आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- राजयोग की तपस्या करनी है*"

➳ _ ➳ राजयोग के अभ्यास द्वारा अपनी सोई हुई शक्तियों को पुनः जागृत कर, स्वयं को सर्व गुणों, सर्वशक्तियों और सर्व खजानों से सम्पन्न करने के लिए मैं अशरीरी बन बैठ जाती हूँ सर्व गुणों, सर्व शक्तियों के सागर अपने शिव पिता परमात्मा की याद मे। *जैसे - जैसे मैं अपने शिव पिता परमात्मा की याद में गहराई तक डूबती जा रही हूँ वैसे - वैसे देह का भान समाप्त होता जा रहा है*।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे देह रूपी वस्त्र धीरे - धीरे उतर रहा है और उसके भीतर छुपी जगमग करती चैतन्य शक्ति आत्मा अपने प्रकाश की रंग बिरंगी किरणे फैलाती उजागर हो रही है। *जैसे सूर्य की किरणें रात के अंधेरे को

अपने प्रकाश से दिन के उजाले में परिवर्तित कर देती है ऐसे सूर्य की किरणों के समान प्रकाश मुझ आत्मा से निकल निकल कर मेरे चारों ओर फैल रहा है*। यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता हुआ मुझ आत्मा के चारो और एक सुंदर औरे का निर्माण कर रहा है।

➳ _ ➳ अपने चारों और निर्मित प्रकाश के इस औरे के साथ अब मैं आत्मा धीरे - धीरे देह रूपी वस्त्र का पूरी तरह त्याग कर ऊपर की बढ़ रही हूँ। *शक्तियों के सागर अपने शिव पिता के सानिध्य में बैठ उनकी सर्वशक्तियों को स्वयं में समा कर उनके समान बनने की इच्छा लिए अब मैं आकाश को पार कर, सूक्ष्मवतन से परें पहुँच गई अपने शिव पिता परमात्मा के पास निर्वाण धाम*। वाणी से परें मेरे शिव पिता परमात्मा का यह धाम शांति की शक्तिशाली किरणों से भरपूर हैं। यहाँ पहुंच कर मैं आत्मा गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ सुख के सागर, प्रेम के सागर, आनन्द के सागर, पवित्रता, ज्ञान और शक्तियों के सागर मेरे शिव पिता मेरे बिल्कुल सामने हैं और अपने इन सभी गुणों की शक्तिशाली किरणों की वर्षा मुझ आत्मा पर करके मुझे इन सभी गुणों से सम्पन्न बना रहे हैं। *अपनी शक्तियों को मुझ में प्रवाहित कर मुझे आप समान शक्तिशाली बना रहे हैं*। बाबा के साथ टच हो कर मैं उनके सभी गुणों, सर्वशक्तियों और सर्व खजानों को स्वयं में समाती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ भरपूर हो कर मैं आत्मा वापिस साकारी दुनिया मे प्रवेश करती हूँ और अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर, तपस्वीमूर्त बन, राजयोग की तपस्या करने एक ऊंचे खुले स्थान पर जाकर बैठ जाती हूँ और अपने पिता परमात्मा का आह्वान करती हूँ। *सेकेंड में मैं स्वयं को सर्वशक्तियों के सागर अपने शिव पिता के साथ कम्बाइंड अनुभव करती हूँ*। सर्वशक्तिवान बाबा से सर्वशक्तियाँ ले कर मैं समस्त वायुमण्डल में चारों ओर प्रवाहित कर रही हूँ और विश्व की सर्व आत्माओं को सुख शांति की अनुभूति करवा कर अपने सेवा स्थल पर वापिस लौट रही हूँ।

➳ _ ➳ *अपने तपस्वी स्वरूप को सदा इमर्ज रूप में रख, राजयोग की तपस्या करते, अब मैं अपने सम्बन्ध संपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं को राजयोग द्वारा राजाई पद प्राप्त कर उन्हें भी मुक्ति, जीवनमुक्ति का वर्सा पाने की अधिकारी आत्मा बना रही हूँ*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपने मस्तक पर सदा बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं विघ्न - विनाशक आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव सेवा द्वारा अविनाशी खुशी की अनुभूति करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा खुशी की अनुभूति कराती हूँ ।*
✺ *मैं सच्ची सेवाधारी हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *साधन ही नहीं है और कहो, हमको तो वैराग्य है, तो कौन मानेगा? साधन हो और वैराग्य हो।* पहले के साधन और अभी के साधनों में कितना अन्तर है? साधना छिप गई है और साधन प्रत्यक्ष हो गये हैं। अच्छा है साधन बड़े दिल से यूज करो क्योंकि साधन आपके लिए ही हैं, लेकिन साधना को मर्ज नहीं करो। बैलेन्स पूरा होना चाहिए। जैसे दुनिया वालों को कहते हो कि कमल पुष्प समान बनो तो साधन होते हुए कमल पुष्प समान बनो। साधन बुरे नहीं हैं, साधन तो आपके कर्म का, योग का फल हैं। लेकिन वृत्ति की बात है। *ऐसे तो नहीं कि साधन के प्रवृत्ति में, साधनों के वश फंस तो नहीं जाते? कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे। यूज करते हुए उन्हों के प्रभाव में नहीं आये, न्यारे।* साधन, बेहद की वैराग्य वृत्ति को मर्ज नहीं करे। अभी विश्व अति में जा रही है तो अभी आवश्यकता है - सच्चे वैराग्य-वृत्ति की और वह वायुमण्डल बनाने वाले आप हो, पहले स्वयं में, फिर विश्व में।

✺ *ड्रिल :- "साधन और साधनों का बैलेन्स रखना"*

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता उड़ चली हूं... अपने प्यारे बाबा के पास... मेरे बाबा सिंहासन पर विराजमान है... उनकी नजर मुझ पर पड़ी और मेरी नजर उन पर हम दोनों एक दूसरे में समा गए हैं... *और मैं गहरी शांति का अनुभव कर रही हूं...* जैसे समुंदर में पानी है उसकी गहराई में समा जाते हैं... उसी तरह बाबा की यादों में समा गई हूं...

➳ _ ➳ बाबा मुझे कुछ कह रहे हैं... मैं बड़े प्यार से सुन रही हूं... मेरे मीठे प्यारे बच्चे-यह जो साधन है... आप को सहारा देने वाला है... आपकी मदद

करने वाला है... *जब कभी आप उदास होते हो तो साधनों का उपयोग कर सकते हो... लेकिन मीठे प्यारे बच्चे साधन के सहारे कभी नहीं जीना...* जैसे बच्चा चलता है... उंगली पकड़कर उसे सहारा देते हैं... लेकिन जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है... तब उसका सहारा हट जाता है... ऐसे आप भी अपने पैरों पर खड़े होकर साधन के वश नहीं साधना के वश रहो... अपने मन की गहरी शांति के लिए किसी साधन को यूज़ करते हो... लेकिन आप तो शांत स्वरुप आत्मा हो... अपनी शक्तियों को इमर्ज करो और समय पर कार्य में लगाओ...

➳ _ ➳ जैसे आप कहते हो कमल पुष्प समान पवित्र बनो... जैसे कीचड़ में कमल होता है... लेकिन कीचड़ से उपराम रहता है... *आप भी बिना किसी साधन के इस भव सागर में कमल फूल समान पवित्र हो...* अब मैं समझ गई हूं... मुझे क्या करना है... साधनों का सहारा लेना है... लेकिन उस के सहारे नहीं जीना अपने साधन से कार्य करना है... मेरे प्राण प्यारे बाबा मुझे क्या-क्या सिखा रहे हो जो बाबा चाहे वही मैं कर रही हूं...

➳ _ ➳ बाबा मुझमें सर्व शक्तियां दे रहे हैं... और मैं सर्व शक्तियों को समाती जा रही हूं... मेरा एक रुप निखर गया है... मैं *संपूर्ण बाप समान बन गई हूं...* संपूर्ण फरिश्ता बन गई हूं... अब मैं धीरे-धीरे साकार वतन में आती हूं... और पवित्रता की किरणें पूरे वायुमंडल में फैला रही हूं... सारा वायुमंडल पवित्र शुद्ध बन गया है... *अब मैं सारे विश्व में बाबा की शक्तियों को फैला रही हूं...* इससे सारी विश्व की आत्माएं शांति अनुभव कर रही है... और सर्वात्मा बापदादा की तरफ आ रही है... समय प्रमाण इन आत्माओं को बापदादा की तरफ ले जाती हूं... बापदादा अपनी बाहों में समा लेते हैं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔